मेरी चिताणी
रामबक्ष जाट

मेरी चिताणी

रामबक्ष जाट

भू और काका के लिए...

(माँ-पिता को मैं इसी सम्बोधन से पुकारता रहा

उन्होंने ही मेरे भीतर चिताणी को आकार दिया)

-रामबक्ष

चिताणी अपने में

1

जब मैंने इस दुनिया में आँखें खोली अर्थात गाँव चिताणी, जिला नागौर, राजस्थान तब वहाँ सब मेरी जाति के ही लोग थे। उन्हीं से लड़ते-भिड़ते प्रेम-प्यार करते हुए बड़ा हुआ। उस समय लगता था कि इस पवित्र भारतभूमि में सिर्फ जाट ही जाट रहते हैं। शेष जातिवाले तो थोड़े बहुत है। जो हैं वे भी चाचा, ताऊ, बुआ, मौसी वगैरह हैं। इसलिए मुझे मेरी जाति का कभी एहसास ही नहीं हुआ।

1969 में मैं पहली बार जोधपुर गया। वहाँ मुझे पता चला कि मेरी एक जाति है और मुझे उनके साथ रहना चाहिए। 1971 में मैं जोधपुर विश्वविद्यालय में पढ़ने गया, तब पता चला कि कुछ लोग राजपूत हैं और हमारा काम है कि सब जाट मिलकर राजपूतों की पिटाई करे और राजपूतों से बचकर रहें। बाकायदा लाठी-भाला-चाकू- छुरी चलती थी। क्यों? यह नहीं पता था। उसी समय प्रो. नामवर सिंह जोधपुर आये। पता चला कि वे राजपूत हैं। लेकिन वे तो बहुत अच्छे हैं। बहुत अच्छा पढ़ाते हैं। फिर वे तो मुझे प्यार भी करते हैं। यहाँ मुझे निर्णय करना था। मुझे दिए गए विचार और मेरे अपने अनुभव में से किसी एक के अनुसार चलना था।

मैंने अपने अनुभव को वरीयता दी और राजपूत हमारे शत्रु है, यह मानना बंद कर दिया। मैं उनसे भी प्रेम प्यार से ही मिलता। धीरे-धीरे राजपूत समाज के लोगों ने भी मुझे कड़वी नजर से देखना बंद कर दिया। फिर मेरी कक्षा में दोस्त मिले, वे भी सभी जातियों के मिले और प्रेमपूर्वक मिले। जाट भी मिले अच्छे दोस्त की तरह मिले। उन सबसे आज भी मित्रता का रिश्ता है। फिर विश्वविद्यालय के अध्यापकों में उस समय स्थानीय बनाम यूपी वालों का झगड़ा चला। बड़ा तीव्र था। छात्रों तक में था। डॉ. मैनेजर पाण्डेय हमारी कक्षा के अत्यन्त प्रिय शिक्षक रहे। अब यूपी-बिहार वालों से चिढ़ने का मतलव हुआ नामवरजी और पाण्डेय जी से चिढ़ना। यह मुझे मंजूर नहीं था। इस कारण ठीक-सा प्रान्तवाद भी मन में पनप नहीं पाया।

गाँव में जातिवाद बहुत कम होता है, दूसरी चीजें ज्यादा होती हैं। आमतौर से उनके मन में 30 प्रतिशत स्वार्थ, 30 प्रतिशत नाते-रिश्तेदारी, 30 प्रतिशत न्याय व धार्मिक भावना उघैर 10 प्रतिशत दया-मानवता होती है।

आधुनिक शिक्षित बुद्धिजीवी में 30 प्रतिशत जातिवाद, 30 प्रतिशत प्रान्तवाद 30 प्रतिशत अध्ययन, विचारधारा, प्रगतिशीलता और 10 प्रतिशत वैयक्तिक स्वार्थ। इसमें कमी कुछ कम, कुछ ज्यादा मात्रा हो जाती है। कई बार प्रान्तवाद और जातिवाद स्वार्थ के साधन हो जाते हैं। कभी अध्ययन, विचारधारा भी छवि चमकाने के काम आ जाती है जो अन्तत: स्वार्थ सिद्धि में सहायक हो जाती है। गाँव में नाते-रिश्तेदारी भी स्वार्थ सिद्धि में सहायक हो जाती है। अत: बंटवारा करना हो 6० प्रतिशत स्वार्थ और 4० प्रतिशत न्याय भावना, यह गाँव जीवन का औसत हो सकता है। बुद्धिजीवियों में किसी विशेष क्षण में 100 प्रतिशत स्वार्थ हो सकता है। खतरा है। इसलिए मैं कहता हूँ कि गाँव में जातिवाद नहीं होता। स्वार्थवाद हो सकता है। है भी।

गाँव में आपसी रिश्तों में व्यक्ति महत्त्वपूर्ण हो जाता है। वह यदि धूर्त, चालाक है तो उसे पसन्द नहीं किया जाता। उसकी न्याय बुद्धि से समीक्षा होती है या फिर गुटबाजी। गुट में किसी भी जाति का शामिल हो सकता है। चिताणी में पिछले कुछ वर्षों से दो गुट बन गए। ग्राम पंचायत के लिए एक बार वार्ड पंच का चुनाव होना था। दोनों गुटों में से किसी एक का वार्ड पंच बनना था। दोनों परस्पर विरोधी गुट। दोनों जाटों के। यदि जातिवाद प्रमुख होता तो किसी जाट को ही वार्ड पंच होना था। परन्तु दूसरे गुट ने चाल चली। उन्होंने एक नायक (जनजाति) व्यक्ति को अपना उम्मीदवार बना दिया। जाटों के वोट तो तय थे। पक्ष हो या विपक्ष मामला बराबर का था। नायकों के तीन-चार परिवार थे। उन्होंने एकमुश्त वोट दिया और चिताणी का वार्ड पंच बना जनजाति का व्यक्ति। नायक। अब हमारी राष्ट्रीय पत्रकारिता सपने में भी नहीं सोच सकती कि नागौर के जाट बहुल गाँव का वार्ड पंच नायक बनेगा। चुनाव जाट और नायक में से किसी एक का होना था। यदि सभी जाट जातिवाद करते तो नायक नहीं जीत सकता था। परन्तु चिताणी ने कहा जातिवाद मुर्दाबाद। जातिवाद शहरी मध्यवर्ग का मानस पुत्र है।

कई बार लगता है कि अच्छा हुआ जो मेरा जन्म जाट जाति में हुआ। इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि मेरे अनुभव ने मुझे जातिवादी नहीं बनाया। जाट होने का कोई फायदा तो मिलता नहीं। तब क्यों जातिवादी बनें? तब जाति निरपेक्ष ही बनें। जिन लोगों को अपनी जाति के कारण फायदा मिलता हैं वे जातिवादी बनें। वे यदि जाति निरपेक्ष बनने की कोशिश करते हैं तो वह कोशिश किसी नाजुक मौके पर उखड़ जाती है और पता चल जाता है कि ज्ञानरंजन तो कायरथ है। अत्यन्त कोमल, सुकुमार कवि केदारनाथ सिंह राजपूत हैं। अब